सुरेन्द्र अग्निहोत्री

उत्तर प्रदेश देश का पहला राज्य बना, जहां गंगा यात्रा का आयोजन किया गया

नदी की प्रकृति है उसका प्रवाह। निरंतर बहते रहना ही नदी में जीवन का संचार करता है। पुरातन संस्कृति में नदियों को मां मानने का निर्देश था। नदियों को सिर्फ पानी के स्रोत या भौगोलिक अस्तित्व की तरह नहीं देखा जाता था, बल्कि मौलिक जीवन-दायक तत्वों की तरह देखा जाता था। आज इस 21वीं सदी में हम नदियों को मां कहते जरूर हैं, लेकिन नदियों को मां मानने का हमारा व्यवहार सिर्फ नदियों की पूजा मात्र तक सीमित न रहे अपितु जीवन के सभी कार्यों में गंगा के महत्व को समझते हुए प्रधानमंत्री की प्रेरणा से नवसमावेशी विकास और अन्तोदय की परिकल्पना को साकार करने वाले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की पहल से शुरू हुई गंगा यात्रा, गंगा जी की अविरलता, निर्मलता व स्वच्छता, जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता तथा यात्रा के तटवर्ती क्षेत्रों के अवस्थापना व आर्थिक विकास से जोड़ने के उद्देश्यों का सन्देश जन-जन तक पहुंचाने और गंगा जी के प्रति हम सबके दायित्व निवर्हन का प्रतीक बनने में कामयाब रही है।

भारतीय संस्कृति तथा जीवन दर्शन में जल को सुजलाम, सुफलाम, मलयज, शीतलाम से विभूषित किया गया है। यह अवधारणा हमारी सनातन संस्कृति और राष्ट्रीय प्रेम का परिचायक है। राष्ट्रीय गीत की मूल भावना भी इस स्वरूप को शब्दों में बांधती है। हवा पानी के प्रदूषण को हम कितना भी अलग रखें परन्तु सुजलाम का सुफलाम से परिणित होना तथा लाभकारी होना तभी संभव होगा जब इसकी व्यापक अवधारणाओं को सामने रखने के लिए गंगा के प्रति चेतना का प्रवाह जागृत करना होगा। नदी की प्रकृति है उसका प्रवाह। निरंतर बहते रहना ही नदी में जीवन का संचार करता है। पुरातन संस्कृति में नदियों को मां मानने का निर्देश था। नदियों को सिर्फ पानी के स्रोत या भौगोलिक अस्तित्व की तरह नहीं देखा जाता था, बल्कि मौलिक जीवन-दायक तत्वों की तरह देखा जाता था। आज इस 21वीं सदी में हम नदियों को मां कहते जरूर हैं, लेकिन नदियों को मां मानने का हमारा व्यवहार सिर्फ नदियों की पूजा मात्र तक सीमित न रहे अपितु जीवन के सभी कार्यो में गंगा के महत्व को समझते हुए प्रधानमंत्री की प्रेरणा से नवसमावेशी विकास और अन्तोदय की परिकल्पना को साकार करने वाले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की पहल से शुरू हुई गंगा यात्रा, गंगा जी की अविरलता, निर्मलता व स्वच्छता, जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता तथा यात्रा के तटवर्ती क्षेत्रों के अवस्थापना व आर्थिक विकास से जोड़ने के उद्देश्यों का सन्देश जन-जन तक पहुंचाने और गंगा जी के प्रति हम सबके दायित्व निवर्हन का प्रतीक बनने में कामयाब रही है। उत्तर प्रदेश, सर्वोत्तम प्रदेश की राह पर अग्रसर होने के लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने 'नमामि गंगे परियोजना' के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित 'गंगा यात्रा हेतु बिजनौर एवं बलिया के लिए गंगा रथों को झण्डी दिखाकर रवाना कर उत्तर प्रदेश को देश का पहला राज्य बना दिया जहां 'गंगा यात्रा का आयोजन किया गया है। प्रदेश में दो स्थानों से गंगा यात्रा का शुभारम्भ किया गया, जनपद बलिया में राज्यपाल महोदया द्वारा तथा बिजनौर में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा। 31 जनवरी, 2020 को दोनों यात्राओं का समागम जनपद कानपुर में हुआ।

गंगा यात्रा को अर्थ-गंगा अभियान के साथ जोड़े जाने के लिए गंगा जी के दोनों ओर बाढ़ क्षेत्र को छोड़कर तटवर्ती क्षेत्रों में बागवानी की व्यवस्थाएं, कृषकों को तटवर्ती क्षेत्रों में अपनी भूमि की मेड़ पर वृक्षारोपण या बागवानी के लिए निःशुल्क फलदार पौधे उपलब्ध कराए। इसके अलावा, कृषकों को अपने खेतों में फलदार पौधों के रोपण के लिए सब्सिडी दिए जाने की कार्य योजना बनायी है। किसानों को प्राकृतिक, जैविक, रसायन व पेस्टीसाइड मुक्त तथा जीरो बजट खेती के सम्बन्ध में जागरूक करते हुए व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएं। फलदार पौधों के रोपण की व्यवस्था हो गयी।

यात्रा में जनता के साथ-साथ जनप्रतिनिधियों की भी सहभागिता के कारण जन के मन में सरकार के संकल्प और सर्मपण की भावना ने उजाले की नयी किरण के तौर पर देखा। मुख्यमंत्री जी का मानना है कि मां गंगा भारत की नदी संस्कृति की प्रतीक है। मां गंगा प्रत्येक भारतीय की आस्था का प्रतीक है। नमामि गंगे परियोजना के माध्यम से मां गंगा को स्वच्छ करने का जो संकल्प प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लिया था, वह अब धरातल पर दिखने लगा है। मां गंगा प्रदेशवासियों के लिए अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है। गंगा यात्रा से तटवर्ती क्षेत्रों में गंगा बांध, गंगा मेले, गंगा पार्क आदि का निर्माण जैसे उपक्रम गंगा के 26 जनपदों में लोगों को नयी राह दिखा का बायस बनी। विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को चिन्हित करते हुए उन्हें लाभान्वित भी किया गया। 'गंगा यात्रा' को साध नहीं साधन के रूप में अर्थ-गंगा से जोड़ा गया ताकि गंगा जी, आस्था का प्रतीक होने के अलावा, देश के विकास और समृद्धि में भी सहायक हो सके। मां गंगा व उसकी सहायक नदियों से उत्तर प्रदेश की धरती सर्वाधिक ऊर्वर है। गंगा यात्रा के दौरान पड़ने वाले 1038 ग्राम पंचायतों और 21 नगर निकायों में ऑर्गेनिक खेती को प्रोत्साहित करने की पहल से नये भारत की कल्पना में रोग मुक्त जीवन के आयाम को सफल बनाने की पृष्ठभूमि के तौर पर गौ आधारित खेती का विशेष प्रशिक्षण संचालित किया जाना आने वाले दिनों में मील का पत्थर साबित होगी। गंगा यात्रा को अर्थ-गंगा अभियान के साथ जोड़े जाने के लिए गंगा जी के दोनों ओर बाढ़ क्षेत्र को छोड़कर तटवर्ती क्षेत्रों में बागवानी की व्यवस्थाएं, कृषकों को तटवर्ती क्षेत्रों में अपनी भूमि की मेड़ पर वृक्षारोपण या बागवानी के लिए निःशुल्क फलदार पौधे उपलब्ध कराए। इसके अलावा, कृषकों को अपने खेतों में फलदार पौधों के रोपण के लिए सब्सिडी दिए जाने की कार्य योजना बनायी है। किसानों को प्राकृतिक, जैविक, रसायन व पेस्टीसाइड मुक्त तथा जीरो बजट खेती के सम्बन्ध में जागरूक करते हुए व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएं। फलदार पौधों के रोपण की व्यवस्था हो गयी। मुख्यमंत्री जी ने गंगा यात्रा के दौरान यात्रा में भागीदारी करते हुए कहा कि गंगा जी का तटवर्ती क्षेत्र विकास और समृद्धि का प्रतीक है और यह प्रदेश व देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने में सहायक है। वाराणसी के मल्टी मॉडल टर्मिनल को भी प्रदेश में अर्थ-गंगा से जोड़ने की व्यवस्था सुनिश्चित किए जाने पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि यह निर्यात का एक हब बन सकता है। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि गंगा यात्रा सभी तटवर्ती जनपदों व गांवों से जुड़ी हो। ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम स्वराज यात्रा की तरह ग्राम चौपालों की व्यवस्थाएं की जाएं। उन्होंने अधिकारियों को गंगा पार्क, गंगा मैदान, गंगा नर्सरी, गंगा तालाब स्थापित किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि गंगा यात्रा के दौरान स्वास्थ्य व आरोग्य मेलों, पशु आरोग्य मेलों, खेलकूद गतिविधियों और प्रतियोगिताओं, स्कूली बच्चों के कार्यक्रम, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए। गंगा यात्रा के दौरान विभिन्न लाभार्थीपरक योजनाओं के पात्र लोगों को अनुमन्य सुविधा व सहायता उपलब्ध करायी जाए। इन योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक लोगों को दिलाने के लिए नए लोगों को भी इन योजनाओं से जोड़ा जाए। इन योजनाओं के प्रति जागरूकता पैदा करने का भी कार्य किया। यात्रा में पूज्यनीय साधू संतों के अलावा मंत्रीगण, सांसद, विधायक गण सहित सभी अन्य जन प्रतिनिधियों (अध्यक्ष जिलापंचायत, नगरपालिका, नगर पंचायत ब्लाक प्रमुख, उपाध्यक्ष सिंचाई बंधु, सदस्य बी.डी.सी., ग्राम प्रधान आदि), स्वैच्छिक संस्थाओं, सामाजिक संगठनों, सुप्रसिद्ध उद्यमियों, सहित्यकारों, प्रबुद्ध पत्रकारों की सहभागिता रही है। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि यात्रा के दौरान गंगा जी में किसी भी प्रकार की गन्दगी नहीं होनी चाहिए। पॉलीथीन व प्लास्टिक के प्रयोग पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहे। सॉलिड व लिक्विड वेस्ट को रोके जाने की व्यवस्था हर हाल में सुनिश्चित की जाए। पशुओं के शवों को गंगा जी में बहाए जाने से रोका जाए। उन्होंने कहा

बिजनौर में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा गंगा यात्रा का शुभारंभ।

कि तटवर्ती प्रत्येक जनपद में शवदाह गृह की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। जिससे शवों को गंगा जी में प्रवाहित करने पर भी रोक लगे। स्वच्छ भारत मिशन के तहत ओ.डी.एफ. प्लस के कार्यक्रमों पर फोकस करते हुए गंगा किनारे के ग्रामों में स्वच्छाग्रहियों द्वारा गंगा को अविरल और निर्मल बनाए जाने के सम्बन्ध में जागरूकता उत्पन्न की जाए। 1026 ग्राम पंचायतों में यह सुनिश्चित किया जाए कि कोई भी परिवार व्यक्तिगत शौचालय से वंचित न हो। तटवर्ती गांवों में गंगा आरती के लिए चबूतरे की व्यवस्था की जाए। उन्होंने कहा कि युवक मंगल दल, एन.सी.सी., एन.एस.एस., नेहरू युवा केन्द्र से गंगा यात्रा को जोड़ते हुए कार्यक्रमों को संचालित किया जाए। खेल मैदानों को विकसित किया जाए। ओपेन जिम की व्यवस्था हो।

हमारी माता है। गंगा भारत की आत्मा है, गंगा हमारी माता है। अविरल गंगा, निर्मल गंगा, पावन गंगा, कुम्भ मेले की शान है गंगा। गंगा बचाओ, जीवन बचाओ, गन्दगी को दूर भगाओ, भारत को स्वच्छ बनाओ। निर्मल गंगा, पावन गंगा संस्कृति का प्राण है गंगा। युगों-युगों से नाता है, गंगा हमारी माता है आदि नारों के साथ मुख्यमंत्री योगी जी का भव्य स्वागत किया गया। मुख्यमंत्री जी ने गंगा यात्रा के दौरान जनसामान्य से संवाद भी किया। गंगा यात्रा के अवसर पर मुख्यमंत्री जी ने मॉडर्न इण्टर कॉलेज, रामराज में रूद्राक्ष का पौधा रोपित किया। वन विभाग व विकास विभाग द्वारा लगायी गई फोटो प्रदर्शनी एवं सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग की गंगा प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया। कार्यक्रम में सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग द्वारा प्रचार साहित्य का भी वितरण किया गया। इस अवसर पर केन्द्रीय पशुपालन राज्यमंत्री डॉ. संजीव कुमार बालियान, गन्ना विकास मंत्री श्री सुरेश राणा, सैनिक कल्याण एवं जनपद के प्रभारी मंत्री श्री चेतन चौहान, व्यावसायिक शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री कपिल देव अग्रवाल, राजस्व राज्य मंत्री श्री विजय कश्यप, विधान परिषद सदस्य श्री स्वतंत्र देव सिंह, सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण तथा शासन-प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री के जनपद प्रयागराज में गंगा यात्रा के अवसर पर आयोजित जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारत की परम्परा पुरूषार्थ चतुष्टय में विश्वास रखती है, धर्म उसका आधार है, अर्थ उसकी दूसरी श्रेणी में आता है। इसके बाद ही कामनाओं की सिद्धि होती है, तभी व्यक्ति को मोक्ष मिलता है। गंगा यात्रा समाज के कल्याण के लिए मां गंगा को उनके पुराने गौरवशाली स्वरूप में वापस लाने का महाअभियान है। यह यात्रा नहीं बल्कि इस बात का संकल्प है कि मां गंगा अविलरल, निर्मल व पवित्र बनी रहे। इस यात्रा से लोगों को वही लाभ मिल सकेगा जो आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व गंगा के निर्मल जल के कारण मिला करता था। पिछले तीन दिन से यात्रा देख रहा हूं और इसमें शामिल भी हुआ। यात्रा में उमड़े जन सैलाब की आस्था को नमन करते हुए उन्होंने प्रधानमंत्री जी के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जी के प्रयासों के कारण ही आज गंगा जी की कृपा प्रत्येक नागरिक को प्राप्त हो रही है।

गंगा के दोनो ओर फलदार पौधों के रोपण को बढ़ावा दिया जा रहा है।

हर-हर गंगे, नमामि गंगे

गंगा यात्रा के दौरान जनपद में जगह-जगह पर मुख्यमंत्री जी का स्वागत व अभिनन्दन किया गया। साथ ही, हर-हर गंगे, नमामि गंगे के नारे लगाये गये। गंगा नदी देश का नाम बढ़ाती, दुनिया में पहचान दिलाती। देश धर्म का नाता है, गंगा

हम लहरें हैं गंगा जल की
हम लहरें हैं गंगा जल की।
क्यों दूषित हो सत्व हमारा
क्यों करें हम सच से किनारा
क्यों न बहे स्वच्छ व निर्मल
रजत स्वर्ण सी पावन धारा
क्यों फैलाएं कचरा-वचरा
धंधे, उद्यम, सैर सपाटे
देवों, ऋषियों की थाती पर
पर्यावरण को क्यों हों घाटे
हम यमुना, गुप्त सरस्वती भी
हम शोभा हैं संगम स्थल की
हम लहरें हैं गंगा जल की।

अमृतलाल मदान की कविता के शब्द लहरें गंगा जल यानि पानी जो मनुष्य ही नहीं पृथ्वी के हर जीव के लिए आवश्यक है। पेड़, धरती, पक्षी, मनुष्य तथा अन्य जीव सभी के जीवन का आधार जल है। पानी न सिर्फ जन-जीवन की जरूरत पूरी करता है। हरियाली, खुशहाली का आधार होता है। जल जीवन का प्राणदायी रूप लेकर जीवन निर्माण के पांच तत्वों में से एक हैं। जीवन धारा के साथ जो जलधारा बहती है तो अनंत वर्षों से सृष्टि के साथ बह रही है। सृष्टि का यह आदित्व है। अपसूक्त ऋग्वेद में लिखी जल पर विश्व में पहली कविता पानी से हरियाली और हरियाली से खुशहाली, इस मुहावरे में जीने का सूत्र है। जल मंत्र पृथ्वी उच्चारित करती है तो जीवन मंत्र गूंजता है, जल में हलचल में रहे हर पल, जीवन में हो जल थल, होगा तब कल। जीवनभाव के लिए अमृत समान इस तत्व के प्रति संरक्षण का संकल्प उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कुशल मार्गदर्शन में लेकर उत्तर प्रदेश सरकार ने हमारे वर्तमान तथा भविष्य के लिए भूमिगर्भा जल कां संचय करने के प्रति समाज को अपेक्षित रूप से जोड़ने का

गंगा यात्रा के दौरान जनपद में जगह-जगह पर मुख्यमंत्री जी का स्वागत व अभिनन्दन किया गया। साथ ही, हर-हर गंगे, नमामि गंगे के नारे लगाये गये। गंगा नदी देश का नाम बढ़ाती, दुनिया में पहचान दिलाती। देश धर्म का नाता है, गंगा हमारी माता है। गंगा भारत की आत्मा है, गंगा हमारी माता है। अविरल गंगा, निर्मल गंगा, पावन गंगा, कुम्भ मेले की शान है गंगा। गंगा बचाओ, जीवन बचाओ, गन्दगी को दूर भगाओ, भारत को स्वच्छ बनाओ।

अनूठा कार्य किया है। पानी अगर जरूरत भर बचाया जा सका तो उसका संचयन ही जीवन और धरा के लिए अमृत बनेगा। 'जल नहीं तो कल नहीं का उदघोष लेकर हमें उपलब्धता और जलोपयोग के बीच संतुलन बनाना पड़ेगा। मनुष्य के साथ हर जीव-जन्तु का पहला और आखरी रिश्ता जल की बूंद से ही है। पक्षियों की उड़ान अगर आसमान में पंख खोले होती है तो उनकी भूख-प्यास का रिश्ता पानी से भी सदियों पुराना है। बहता पानी स्वच्छ तथा निर्मल व पीने योग्य माना जाता है। पानी की प्रकृति तथा रूप में बारे में संत कबीर दास जी ने एक दोहे में कहा है-पानी बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम, दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानों का काम। जल और जीवन एक ही उद्गम के स्रोत हैं। जल से लोक विश्वास तथा आस्थायें जुड़ी हैं। पुराणों में नदियों को विराट पुरूष की नाड़ियों के समान कहा गया है। नदियों को पूजनीय या देवी तुल्य मानने वाले हमारे देशवासी परम्परागत जल स्रोतों को बचायें, इस प्रेरणा का पाठ पढ़ाने में कामयाब रही गंगा यात्रा का लोक के बीच भागीरथी प्रयास के रूप में पहचानी जाना, सरकार ही नहीं समाज के लिए एक महान उपलब्धि बन गयी।

गंगा पर श्लोक

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

अर्थात् हे गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिंधु, कावेरी नदियों! (मेरे स्नान करने के) इस जल में (आप सभी) पधारिये। एक अन्य श्लोक भी बहुधा स्नान करते समय बोला जाता है, जो इस प्रकार है।

गंगा सिंधु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा
कावेरी सरयू महेन्द्रतनया चर्मण्यवती वेदिका।
क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता जया गण्डकी
पूर्णाः पूर्णजलैः समुद्रसहिताः कुर्वन्तु मे मंगलम्।।

इस श्लोक का अर्थ भी यही है कि उपर्युक्त सभी जल से परिपूर्ण नदियां, समुद्र सहित मेरा कल्याण करें। गंगा की महिमा तो वर्णनातीत है। उसे प्रणाम कर अपना जीवन सार्थक करने की परंपरा अति प्राचीन है।

नमामि गंगे! तव पादपंकजं
सुरसुरैर्वन्दितदिव्यरूपम्।
भुक्तिं च मुक्ति च ददासि नित्यम्
भावानुसोरेण सदा नारणाम्।।

अर्थात् हे गंगा जी मैं देव व दैत्यों द्वारा पूजित आपके दिव्य पादपद्मों को प्रणाम करता हूं। आप मनुष्यों को सदा उनके भावानुसार भोग एवं मोक्ष प्रदान करती हैं। यही नहीं, स्नान के समय गंगाजी के 12 नामों वाला यह श्लोक भी बोला जाता है, जिसमें गंगाजी का यह वचन निहित है कि स्नान के समय कोई मेरा जहां-जहां भी स्मरण करेगा, मैं वहां के जल में आ जाऊंगी।

नंदिनी नलिनी सीता मालती च महापगा।
विष्णुपादाब्जसम्भूता गंगा त्रिपथगामिनी।।
भागीरथी भोगवती जहान्वी त्रिदशेश्वरी।
द्वादशैतानि नामानि यत्र यत्र जलाशये।।
स्नानोद्यतः स्मरेन्नित्यं तत्र तत्र वसाम्यहम्।।
(आचार प्रकाश, आचारेन्दु, पृ. 45)

साधारण कूप, बावडी व अन्य जलाशयों के अलावा अन्य पवित्र नदियों के जल में भी गंगा के आवाहन को आवश्यक माना गया है। 'स्कन्द पुराण' का कथन है,

स्नानकालेऽश्रन्यतीर्थेषु जप्यते जाहान्वी जनैः।
विना विष्णुपदीं कान्यत् समर्था ह्यवशोधने।

इसका अर्थ यह है कि अन्य तीर्थों में स्नान करते समय भी गंगा का नाम ही लोग जपा करते हैं, गंगा के बिना अन्य कौन पाप धोने में समर्थ है? अग्निपुराण के मतानुसार तीर्थ के जल से गंगाजल का जल अधिक श्रेष्ठ है, "तीर्थतोयं ततः पुण्यं गंगातोयं ततोधिकम्"। सहस्र नामों से पवित्र देवापगा गंगा के स्तवन गाये जाते हैं, तथा अपने अघ-मर्षण की अभ्यर्थना की जाती है, दूध, गंध, धूप, दीप, पुष्प, माल्य आदि से पूजा-अर्चना की जाती है। गंगा के भू पर अवतरण की तिथि पर गंग-दशहरा मनाया जाता है व स्नान-पुण्य आदि करके श्रद्धालु जन स्वयं को पवित्र करते हैं।

ज्येष्ठ मास उजियारी दशमी, मंगलवार को गंग
अवतरी मैया मकरवाहिनी, दुग्ध-से उजले अंग

कानपुर में गंगा यात्रा के समापन के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी का आगमन।

संपर्क करें
सुरेन्द्र अग्निहोत्री
ए-305, ओ.सी.आर. बिल्डिंग
विधानसभा मार्ग, लखनऊ
मो. 9415508695